❋ 11 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] मीठे बच्चे, तुम मुझे याद करो तो मैं गैरन्टी करता हूँ कि बिगर सज़ा खाये तुम मेरे घर में चलेंगे। तुम एक बाप से दिल लगाओ, इस पुरानी दुनिया को देखते भी नहीं देखो, इस दुनिया में रहते पवित्र बनकर दिखाओ, तो बाबा तुम्हें विश्व की बादशाही अवश्य देंगे।

2] अब बाप कहते हैं अपने दिल से पूछो– हे आत्मायें, तुम पतित कैसे चल सकेंगी ? पावन तो जरूर बनना है। अब घर चलना है और तो कोई बात नहीं कहते। भक्ति मार्ग में तुमने इतना समय पुरूषार्थ किया है, किसके लिए? मुक्ति के लिए। तो अब बाप पूछते हैं घर चलने का विचार है? बच्चे कहते– बाबा इसके लिए ही तो इतनी भक्ति की है। यह भी जानते हो जो भी जीव आत्मायें हैं, सबको ले जाना है। परन्तु पवित्र बनकर घर जाना है फिर पवित्र आत्मायें ही पहले-पहले आती हैं। अपवित्र आत्मायें तो घर में रह नहीं सकती। अभी जो भी करोड़ों आत्मायें हैं, सबको घर जरूर जाना है। उस घर को शान्तिधाम वा वानप्रस्थ कहा जाता है। हम आत्माओं को पावन बनकर पावन शान्तिधाम जाना है।

3] शान्तिधाम जहाँ सब पवित्र आत्मायें निवास करता हैं। वह है आत्माओं की पवित्र दुनिया-वाइसलेस, इनकारपोरियल वर्ल्ड। यह पुरानी दुनिया है सब जीव आत्माओं की। सब पतित हैं। अब बाप आये हैं आत्माओं को पावन बनाकर, पावन दुनिया शान्तिधाम में ले जाने। फिर जो राजयोग सीखते हैं वही पावन सुखधाम में आयेंगे। यह तो बहुत सहज है, इसमें कोई भी बात का विचार नहीं करना है। बुद्धि से समझना है। हम आत्माओं का बाप आया हुआ है, हमको पावन शान्तिधाम में ले जाने।

4] मुक्तिधाम में जाने के लिए मनुष्य कितनी मेहनत करते हैं। उसको कहा जाता है भक्ति मार्ग। अभी भक्ति मार्ग खलास होना है ड्रामा अनुसार।

5] आत्मा में खाद पड़ती है तो फिर उसको शरीर भी ऐसा मिलेगा। आत्मा गोल्डन एजेड से सिलवर एजेड बन जाती है। चांदी की खाद आत्मा में पड़ती है फिर दिन-प्रतिदिन जास्ती छी-छी खाद पड़ती है मुलम्मे की। बाप बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। कोई नहीं समझते हैं तो हाथ उठाओ। जिसने 84 जन्मों का चक्र लगाया है, उनको ही समझायेंगे। बाप कहते हैं इनके 84 जन्मों के अन्त में मैं आकर प्रवेश करता हूँ। इनको ही फिर पहले नम्बर में आना है। जो पहले था, वह लास्ट में है। उनको ही पहले नम्बर में जाना है, जो बहुत जन्मों के अन्त में पतित बन गया है, मैं पतित-पावन उनके ही शरीर में आता हूँ, उनको पावन बनाता हूँ। कितना क्लीयर कर समझाता हूँ।

6] पहले-पहले लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी। वहाँ विकारी बच्चे नहीं होते, रावण राज्य ही नहीं। योगबल से सब कुछ होता है, तुमको साक्षात्कार होता है– अब बच्चा बन गर्भ महल में जाना है। खुशी से जाते हैं। यहाँ तो मनुष्य कितना रोते चिल्लाते हैं। यहाँ तो गर्भ जेल में जाते हैं ना। वहाँ रोने पीटने की बात नहीं। शरीर तो बदलना जरूर है। जैसे सर्प का मिसाल है, इसमें मूँझने की बात हीं नहीं।

7] अपने हाथ में लॉ उठाना भी क्रोध का अंश है।

...2

❋ 11 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ योग-

1] बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे कट जायेंगे। कल्प-कल्प यही पैगाम देता हूँ। अपने को आत्मा समझो, यह देह तो खलास हो जानी है। बाकी आत्माओं को वापिस जाना है। उनको कहते हैं निरकारी दुनिया। सब निराकारी आत्मायें वहाँ रहती हैं। वह घर है आत्माओं का। निराकार बाप भी वहाँ रहते हैं।

2] योग में नहीं रहे होंगे तो फिर अन्त में वह बहुत पश्चाताप् करेंगे, सजा खायेंगे, पद भी भ्रष्ट हो जायेगा।

3] बाप कहते हैं– बच्चे तुम मुझे याद करो, मैं गैरन्टी करता हूँ तुम बिगर सजा खाये घर चले जायेंगे। याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अगर याद नहीं करेंगे तो सजायें खानी पड़ेगी, पद भी भ्रष्ट हो जायेगा।

4] जास्ती पूछने का रहता नहीं है। एकदम पावन बनने के पुरूषार्थ में लग जाना चाहिए। बाप को याद करना मुश्किल होता है क्या! बाप के सामने बैठे हो ना। मैं तुम्हारा बाप तुमको सुख का वर्सा देता हूँ। तुम यह एक अन्तिम जन्म याद में नहीं रह सकते हो!

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– शान्तिधाम पावन आत्माओं का घर है, उस घर में चलना है तो सम्पूर्ण पावन बनो।

2] दिल लगानी है एक माशुक से, वह कहते हैं मुझे एक के साथ दिल लगाओ तो तुम पावन बनेंगे।

3] अभी तुम बच्चों को सम्पूर्ण निर्विकारी बनता है। जो पीछे आते हैं वह सजा खाकर जाते हैं इसलिए फिर आते भी ऐसी दुनिया में हैं जहाँ दो कला कम हो जाती हैं। उनको सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहेंगे ससलिए अब पुरूषार्थ भी पूरा करना चाहिए। ऐसा न हो कि कम पद हो जाए। भल रावण राज्य नहीं है परन्तु पद तो नम्बरवार है ना।

4] बाप कहते हैं कोई में भी ममत्व नही रखो। वह तो सब कुछ खत्म होना ही है। याद तो एक बाप को ही करना है। याद तो एक बाप को ही करना है। चलते फिरते बाप और अपनी राजधानी को याद करो। दैवीगुण भी धारण करने है।

5] सिर्फ एक जन्म पवित्र रहने से कितनी भारी आमदनी हो जाती है। भल इकट्ठे रहो, ज्ञान तलवार बीच में हो। पवित्र रह दिखाया, तो सबसे ऊंच पद पायेंगे क्योंकि बाल ब्रह्मचारी ठहरें। फिर नॉलेज भी चाहिए। औरो को आप समान बनाना है। सन्यासियों को दिखाना है कि कैसे हम इकट्ठे रहते पवित्र रहते हैं। तो समझेंगे इनमें तो बड़ी ताकत है।

6] बाप कहते हैं इस एक जन्म पवित्र रहने से 21 जन्म तुम विश्व के मालिका बनेंगे। कितनी बड़ी प्राइज़ मिलती है तो क्यों नहीं पवित्र रह दिखायेंगे।

❋ सेवा-

1] – – – –